उदाहरण - भागः, त्यागः, यागः॥ नायकः, चायकः, पावकः, स्तावकः, कारकः, हारकः, पाठकः, पाचकः॥ शालायां भवः = शालीयः, मालीयः॥ उपगोरपत्यम् = औपगवः, औपमन्यवः॥ ऐतिकायनः, आश्वलायनः, आरण्यः॥ अचैषीत्, अनैषीत्, अलावीत्, अपावीत्, अकार्षीत्, अहार्षीत्, अपाठीत्॥

सिद्धि - भ॒जँ॑ - सेवायाम् - धातु आनुदात्त है और स्वरितेत् है ।

अनुदात्त धातु होने से इट् आगम नही होता सो धातु अनिट् है।

स्वरितेत् होने से उभयपदी है, परस्मैपद / आत्मनेपद दोनों मे रूप चलता है ।

[1] भजँ → भज्
उपदेशेऽजनुनासिक इत् 1.3.2 से जकारोत्तरवर्ती अनुनासिक अँ की इत् संज्ञा
तस्य लोपः 1.3.9 अँ का लोप हो गया
& लोप क्या है? - अदर्शनं लोपः 1.1.60

भज् →
भूवादयो धातवः 1.3.1 से भज् की धातु संज्ञा हुई
धातोः 3.1.91
इस "धातो:" के अधिकार मे

→
भावे 3.3.18 सिद्धावस्थापन्न धात्वर्थ मे घञ् की अनु० - पदरुजविशस्पृशो घञ् 3.3.16
प्रत्ययः 3.1.1 परश्च 3.1.2
की अनुवृत्ति आ रही है।

धातु से सिद्धावस्थापन्न भाव अर्थ मे घञ् प्रत्यय होता है और वह परे होता है ।

भज् + घञ् → भज् + घ
हलन्त्यम् 1.3.3 से ञ् की इत् संज्ञा हुई
तस्य लोपः 1.3.9
अदर्शनं लोपः 1.1.60

भज् + घ → भज् + अ
लशक्वतद्धिते 1.3.8 घ की इत् संज्ञा हुई
तस्य लोपः 1.3.9
अदर्शनं लोपः 1.1.60

भज् + अ →
अ को निमित्त मानकर - यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् 1.4.13
भ् अ ज् = भज् - पूरे समुदाय की अङ्ग संज्ञा हुई
अङ्गस्य 6.4.1 के आधिकार मे
(अङ्ग का अधिकार ई च गणः 7.4.97 तक है।)

→
अत उपधायाः 7.2.116 से अङ्ग के उपधा के स्थान मे वृद्धि आदेश ।
वृद्धि क्या है? - वृद्धिरादैच् 1.1.1 = आ ऐ औ का नाम वृद्धि है।
उपधा क्या है? अलोन्त्यात् पूर्व उपधा 1.1.65
अन्तिम वर्ण के पूर्व वर्ण की उपधा संज्ञा होती है

→ भाज् +अ
षष्ठी स्थानेयोगा 1.1.49
उपधा "अ" के स्थान मे कौन सा वृद्धि हो?
स्थानेन्तरतमः 1.1.50 से
"अ" के स्थान मे सद्दशतम वृद्धि "आ" आदेश हुआ

→
आ को निमित्त मानकर यस्मात् प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम् 1.4.13
भ् आ ज् = भाज् - पूरे समुदाय की अङ्ग संज्ञा हुई
अङ्गस्य 6.4.1 के आधिकार मे - चजोः कु घिन्ण्यतोः 7.3.52 से
घित् परे होने पर अङ्ग के च ज को कर्वग हो ।

[2] → भाग् +अ
षष्ठी स्थानेयोगा 1.1.49
कवर्ग मे ५ वर्ण है - तो कौन सा हो?
स्थानेन्तरतमः 1.1.50 से
ज के स्थान मे सद्दशतम "ग" हो गया।

भाग् +अ → भाग।
अचहीनं परेण सञ्युज्यम् । वार्तिक

[1]सामान्यत: धातु पाठ मे धातु के अन्त मे अनुनासिक स्वर नही लिखा जाता । प्रतिज्ञानुनासिक्या: पाणिनीया: । ये गुरु परम्परा मे पाणिनी के शिष्य अर्थात गुरु अपने शिष्य को बताते हैं की कहाँ अनुनासिक है और कहाँ नहीं ।

[2]इचुयशास्ताल्वय: । = ज का स्थान तालु है ।
अकुहुविसर्जनीयाकण्ठ्या: । = कवर्ग का स्थान कण्ठ है ।
सृपष्टकरणा: स्पर्शा: । "क" से "म" पर्यन्त जो २५ वर्ण हैं ये स्पर्श वर्ण हैं ।
वर्गाणां तृतीयचतुर्था अन्तस्था हकारानुस्वारौ यमौ च तृतीयचतुर्थौ नासिक्याश्च संवृतकण्ठा नादानुप्रदाना घोषवन्तश्च । (ल० पा०)
हश - घोष: । खर - अघोष: ।
एके अन्तस्थाश्चाल्पप्राणा इतरे महाप्राणा: (ल० पा०) ।
यथा तृतीयास्था पञ्चमा: । जैसा तृतीय वर्ग है वैसे पञ्चम वर्ग भी ।
आनुनासिक्यमेषामधिको गुण: । अब "ग" और "ङ" बचते है । पर ङ मे अनुनासिक्य गुण अधिक है, ग और ज दोनो निरनुनासिक है ।
इस तरह "ज" का सद्दशतम् वर्ण "ग" । भाज् के "ज" को "ग" हो जाता है।

भाग → (कृदतिङ् 3.1.93 से घञ् की कृत् संज्ञा हुई; कृत्तद्धितसमासाश्च 1.2.46 से प्रातिपदिक संज्ञा हुई) → (ङ्याप्प्रातिपदिकात् 4.1.1; स्वौजसमौट्छस्टाभ्याम्भिस्ङेभ्याम्भ्यस्ङसिभ्याम्भ्यस्-ङसोसाम्ङ्योस्सुप् 4.1.2 भाग प्रातिपदिक से सुपादि २१ प्रत्यय होते हैं ।)

भाग तक की सिद्धि को बार-बार नही दिखाया जायेगा ।

प्रथमा एकवचनम्

भाग + सुँ → (उपदेशेऽजनुनासिक इत् 1.3.2 उँ का लोप हुआ; तस्य लोपः 1.3.9 अदर्शनं लोपः 1.1.60) → भाग + स् → (ससजुषो रुः 8.2.66 पदान्त सकर को रुँ आदेश) → भाग + रुँ → (उपदेशेऽजनुनासिक इत् 1.3.2 उँ की इत् संज्ञा; तस्य लोपः 1.3.9 अदर्शनं लोपः 1.1.60) → भाग + र्

→ (विरामोवसानम् 1.4.110 र् की अवसान संज्ञा हुई; खरवसानयोर्विसर्जनीयः 8.3.15 पदान्त "र" को विसर्ग हो ।) → **भाग:।**

इसे ध्यान से समझें क्योंकि इस किताब का विस्तार रोकने के लिए आगे की सिद्धियों मे बार बार लोप सूत्रों का वर्णन नही किया जायेगा । बस अनुबन्ध लोप लिख दिया जायेगा । एक बार सारे इत् सूत्रों को पुन: लिख देते हैं, ताकि और अभ्यास हो जाये ।

उपदेशेऽजनुनासिक इत् 1.3.2

हलन्त्यम् 1.3.3

न विभक्तौ तुस्माः 1.3.4

आदिर्ञिटुडवः 1.3.5

षः प्रत्ययस्य 1.3.6

चुटू 1.3.7

लशक्वतद्धिते 1.3.8

उपर बाताये गये सूत्रों से "इत्" संज्ञा की जाती है । और इत् का प्रयोजन क्या है ? तो अगला सूत्र कहते हैं

तस्य लोपः 1.3.9

अब प्रश्न ये की लोप क्या है?

अदर्शनं लोपः 1.1.60

ये अष्टाध्यायी का इत् प्रकरण है । पूरे अष्टाध्यायी मे इत् के विषय मे और कहीं पर नही कहा गया है ।